THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-01 | April-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.11

बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ अमित कुमार सिंह[1] और यसबंत कुमारी[2]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, हिंदू कॉलेज मुरादाबाद
[2]एम. एड. छात्रा खंडेलवाल कॉलेज ऑफ एजूकेशन एंड टेक्नोलॉजी, बरेली

सारांश

इस शोध पत्र "बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन" में भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत विद्यार्थियों के मानसिक, सामाजिक, , व्यवहारिक एवं व्यावसायिक विकास से संबंधित अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दे को वैज्ञानिक रूप से परखा गया है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीकी रूप से उन्नत परिवेश में जीवन कौशल विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास का आधार बन चुके हैं इसलिए स्नातक स्तर पर अध्ययनरत युवा वर्ग के इन कौशलों का विश्लेषणात्मक अध्ययन अत्यधिक प्रासंगिक है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह परीक्षण करना था कि क्या लिंग (छात्र/छात्रा) तथा निवास क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) के आधार पर विद्यार्थियों के जीवन कौशल में कोई सार्थक अंतर विद्यमान है या नहीं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए दो प्रमुख परिकल्पनाएँ निर्मित की गईं – पहली परिकल्पना यह कि स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के जीवन कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है और दूसरी परिकल्पना यह कि ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के जीवन कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है। शोध की जनसंख्या बरेली जनपद के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विद्यार्थी थे जिनमें से 250 विद्यार्थियों को स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना चयन विधि से चुना गया, जिससे नमूने की प्रतिनिधिकता एवं निष्पक्षता सुनिश्चित हो सके। शोध उपकरण के रूप में डॉ. अंजूम अहमद एवं श्रीमती सब्बा परवीन द्वारा निर्मित जीवन कौशल प्रश्नावली का प्रयोग किया गया, जिसमें निर्णय क्षमता, समस्या समाधान, संप्रेषण कौशल, आत्म–जागरूकता, सहानुभूति, तनाव प्रबंधन, समय प्रबंधन, नेतृत्व क्षमता, सृजनात्मकता एवं आलोचनात्मक चिंतन जैसे जीवन कौशल के प्रमुख आयाम शामिल थे। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का उपयोग किया गया, जिससे समूहों के बीच अंतर की प्रकृति को वैज्ञानिक रूप से जांचा जा सके। विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार यह स्पष्ट हुआ कि छात्र और छात्राओं के जीवन कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात लिंग के आधार पर जीवन कौशल के विकास में कोई उल्लेखनीय भिन्नता परिलक्षित नहीं होती। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि उच्च शिक्षा के स्तर पर जीवन कौशल का विकास विद्यार्थियों की व्यक्तिगत क्षमता, अनुभवों और शैक्षणिक वातावरण पर अधिक निर्भर है न कि उनके लिंग पर। वहीं दूसरी ओर, ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के जीवन कौशल में सार्थक अंतर पाया गया, जिसमें शहरी विद्यार्थियों का

जीवन कौशल स्तर ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक उन्नत पाया गया। यह अंतर संकेत करता है कि शहरी परिवेश में मिलने वाले बेहतर शैक्षणिक संसाधन, तकनीकी सुविधाएँ, व्यक्तित्व निर्माण के अवसर, सामाजिक सहभागिता और विविधतापूर्ण अनुभव जीवन कौशल के विकास को प्रोत्साहित करते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित संसाधन, कम exposure और अवसरों की कमी के कारण विद्यार्थियों के जीवन कौशल अपेक्षाकृत कम विकसित हो पाते हैं। समग्र रूप से यह शोध उच्च शिक्षा में जीवन कौशल के संवर्धन की आवश्यकता पर बल देता है और संकेत करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और संसाधनों के विस्तार की आवश्यकता है ताकि जीवन कौशल विकास में क्षेत्रीय असमानताओं को कम किया जा सके। यह अध्ययन शिक्षा नीति निर्माताओं, महाविद्यालयों, शिक्षकों एवं सामाजिक संगठनों के लिए महत्वपूर्ण दिशा–निर्देश प्रदान करता है, जिससे भविष्य में स्नातक विद्यार्थियों के जीवन कौशल को अधिक प्रभावी रूप से विकसित कर रोजगार–योग्यता, सामाजिक दक्षता एवं व्यक्तिगत सशक्तिकरण को बढ़ाया जा सके।

मुख्यशब्द – स्नातक स्तर, विद्यार्थी, जीवन कौशल

प्रस्तावना

वर्तमान वैश्विक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी क्रांति, सामाजिक परिवर्तन और जटिल जीवन परिस्थितियों के दौर में जीवन कौशल शिक्षा को उच्च शिक्षण स्तर पर अनिवार्य तत्व के रूप में देखा जाने लगा है विशेषकर स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के लिए, जो किशोरावस्था और वयस्कता के संक्रमण बिंदु पर खड़े होते हैं और भविष्य की व्यक्तिगत, व्यावसायिक तथा सामाजिक भूमिकाओं के लिए स्वयं को तैयार कर रहे होते हैं। जीवन कौशल विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा परिभाषित उन मनो–सामाजिक क्षमताओं का समूह है, जिनके माध्यम से व्यक्ति अपने दैनिक जीवन की चुनौतियों, तनावों, संघर्षों और बदलती परिस्थितियों का संतुलित, सक्षम व प्रभावी ढंग से सामना कर सकता है। स्नातक स्तर वह अवस्था है जब विद्यार्थी न केवल ज्ञान अर्जन कर रहे होते हैं, बल्कि अपनी पहचान, व्यक्तित्व, मूल्यों, व्यवहार का ढाँचा, निर्णय क्षमता, सामूहिक सहयोग, नेतृत्व गुण, संवेदनशीलता, आत्मविश्वास और समस्या–समाधान की योग्यता विकसित कर रहे होते हैं। इस स्तर पर जीवन कौशलों का विकास विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक अनुकूलन, रोजगार क्षमता, कैरियर निर्माण और जीवन–संतुष्टि के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। आधुनिक युग में युवाओं पर बढ़ती शैक्षणिक माँगें, प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव, रोजगार की अनिश्चितता, डिजिटल मीडिया का तीव्र प्रभाव, सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ, पारिवारिक अपेक्षाएँ और बहुआयामी तनाव जीवन कौशलों के सुव्यवस्थित विकास की आवश्यकता को और भी प्रबल बनाते हैं।

अतः स्नातक विद्यार्थियों के जीवन कौशलों जैसे निर्णय लेना, समस्या–समाधान, सृजनात्मक चिंतन, आलोचनात्मक चिंतन, संप्रेषण कौशल, सहानुभूति, आत्म–जागरूकता, तनाव प्रबंधन, भावनात्मक संतुलन, पारस्परिक संबंध, समय प्रबंधन, अनुकूलन क्षमता, नेतृत्व क्षमता और संघर्ष प्रबंधन का विश्लेषणात्मक अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्रों का एक बड़ा वर्ग विविध पृष्ठभूमियों ग्रामीण एवं शहरी, सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों से आए हुए, विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तरों से संबंधित का प्रतिनिधित्व करता है। ऐसे में उनके जीवन कौशलों के विकास में विषमता, चुनौतियाँ और अवसर देखने को मिलते हैं, जिन्हें शोध के माध्यम से समझना अत्यंत आवश्यक है। जीवन कौशलों की कमी के कारण स्नातक विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का अभाव, निर्णयहीनता, तनाव, अवसाद, सामाजिक अलगाव, संचार बाधाएँ, संबंधों में अस्थिरता, कैरियर नियोजन में भ्रम तथा शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट देखने को मिलती है। वहीं जिन विद्यार्थियों में जीवन कौशलों का स्तर अधिक विकसित होता है, वे अधिक आत्मनिर्भर, सशक्त, सकारात्मक

दृष्टिकोण वाले, सामाजिक रूप से समन्वित और व्यावसायिक रूप से अधिक सफल होते हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जीवन कौशल शिक्षा को पाठ्यक्रम, सह–करीय गतिविधियों, व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों, परामर्श सेवाओं, एनएसएस, एनसीसी, कार्यशालाओं एवं कौशल–आधारित प्रशिक्षण के माध्यम से बढ़ावा दिया जा रहा है, किंतु इनकी प्रभावशीलता, उपलब्धता और विद्यार्थियों द्वारा अधिग्रहण का स्तर समान नहीं है इसलिए स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन कौशलों का समग्र, प्रणालीबद्ध और विश्लेषणात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करने में सहायक रहेगा कि वे किन कौशलों में सक्षम हैं, किन क्षेत्रों में कमी है, कौन से सामाजिक, पारिवारिक, शैक्षणिक, मनोवैज्ञानिक या आर्थिक कारक उनके जीवन कौशलों को प्रभावित करते हैं और उच्च शिक्षा संस्थानों को जीवन कौशलों के विकास हेतु किस प्रकार की रणनीतियाँ अपनानी चाहिए।

यह अध्ययन न केवल शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि यह नीति–निर्माताओं, शिक्षकों, परामर्शदाताओं और अभिभावकों के लिए भी उपयोगी है क्योंकि यह युवाओं को सक्षम, सशक्त, सकारात्मक, रचनात्मक और रोजगारोन्मुख बनाने की दिशा में ठोस मार्गदर्शन प्रदान करता है। आज के समय में जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन, वैश्वीकरण और नई आर्थिक नीतियाँ नौकरी की प्रकृति व कार्य–परिस्थितियों को तेजी से बदल रही हैं, तब जीवन कौशल युवाओं को केवल 'नौकरी पाने' में ही नहीं, बल्कि 'जीवन को सफलतापूर्वक जीने' में भी सक्षम बनाते हैं। अतः स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन कौशलों का विश्लेषणात्मक अध्ययन समय की माँग है, जो न केवल युवा पीढ़ी के समग्र विकास में योगदान देगा, बल्कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को भी सुदृढ़ बनाएगा।

आवश्यकता एवं महत्व

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन कौशल का विश्लेषणात्मक अध्ययन वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण विषय बन गया है क्योंकि उच्च शिक्षा के इस चरण में छात्र न केवल अकादमिक ज्ञान अर्जित करते हैं बल्कि व्यक्तिगत, सामाजिक, व्यावसायिक एवं नैतिक विकास की दिशा में भी आगे बढ़ते हैं। जीवन कौशल जैसे समस्या–समाधान, निर्णय–निर्धारण, आलोचनात्मक चिंतन, संप्रेषण क्षमता, सहानुभूति, आत्म–नियंत्रण, भावनात्मक संतुलन, समय–प्रबंधन, टीम–वर्क एवं नेतृत्व आधुनिक जीवन के लिए अनिवार्य हो चुके हैं।

स्नातक स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था से वयस्कता की ओर संक्रमण के दौर में होते हैं, जहां वे सामाजिक दबावों, करियर चयन, आत्म–पहचान, संबंधों के प्रबंधन, तकनीकी परिवर्तनों एवं प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण से गुजरते हैं। ऐसे में जीवन कौशल का विकास उनके व्यक्तित्व को संतुलित, आत्मविश्वासी एवं सक्षम बनाता है। इस विषय के अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी बढ़ गई है कि आज का युग ज्ञान–आधारित, तकनीक–संचालित एवं नवाचार–केंद्रित है, जहां केवल विषय–ज्ञान पर्याप्त नहीं, बल्कि समस्याओं से निपटने की क्षमता, टीम में कार्य करने की योग्यता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है।

स्नातक विद्यार्थियों में आत्म–विश्वास की कमी, तनाव, चिंता, संचार–कौशल की कमजोरी, समय–प्रबंधन में कठिनाई तथा निर्णय–क्षमता की अस्पष्टता अक्सर देखी जाती है, जो रोजगार–योग्यता को प्रभावित करती है। इस प्रकार जीवन कौशल का अध्ययन न केवल विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाता है बल्कि उनके कैरियर विकास, प्रतिस्पर्धात्मक क्षमताओं व सामाजिक परिपक्वता को भी सुदृढ़ करता है। इसके अध्ययन से शिक्षकों, अभिभावकों व शिक्षा–नीति निर्माताओं को यह समझने में सहायता मिलती है कि स्नातक विद्यार्थियों की वास्तविक आवश्यकताएँ क्या हैं और उन्हें किस प्रकार की प्रशिक्षण–कार्यशालाओं, पाठ्यक्रम सुधारों व कौशल–विकास कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जीवन कौशल शिक्षा को अनिवार्य तत्व के रूप में शामिल करने की दिशा में यह अध्ययन व्यावहारिक सुझाव प्रदान करता है।

यह शोध समाज के लिए भी इसलिए महत्वपूर्ण है कि सक्षम, संवेदनशील, जागरूक एवं जिम्मेदार नागरिकों के निर्माण में जीवन कौशल आधारशिला का काम करते हैं। जीवन कौशल सीखने वाले विद्यार्थी तनावपूर्ण स्थितियों में विवेकपूर्ण निर्णय लेते हैं, सामाजिक विविधता को स्वीकारते हैं, नैतिक मूल्यों को अपनाते हैं और डिजिटल युग की चुनौतियों का सामना सहजता से कर पाते हैं। इसके अतिरिक्त, भारत जैसे विकासशील देश में युवा आबादी का बड़ा हिस्सा स्नातक स्तर पर अध्ययनरत है, इसलिए उनके जीवन कौशल का विकास राष्ट्र की आर्थिक प्रगति, सामाजिक सामंजस्य एवं मानव संसाधन की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार, स्नातक विद्यार्थियों के जीवन कौशल के विश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्यकता और महत्व शैक्षणिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं व्यावसायिक सभी दृष्टियों से अत्यधिक प्रासंगिक है, जो उन्हें सफल, संतुलित एवं उत्पादक जीवन जीने हेतु सशक्त बनाता है।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

(1) शर्मा, मिनाक्षी (2025) इस शोध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, व्यक्तिगत विकास पहल और विश्वविद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन के संदर्भ में जीवन कौशल का अध्ययन किया गया। पंजाब राज्य के 800 विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में पाया गया कि पुरुष छात्रों के जीवन कौशल का स्तर महिला छात्रों से अधिक है तथा सरकारी विश्वविद्यालयों के छात्र निजी विश्वविद्यालयों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

(2) शुक्ला एवं त्रिपाठी (2024) रीवा जिले के सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में संचालित जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया। 10 विद्यालयों पर आधारित अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि जीवन कौशल शिक्षा योजना विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक विकास में प्रभावी सिद्ध हुई है।

(3) ठाकुर, मोनिका एवं नीलम (2024) हिमाचल प्रदेश के 1200 किशोरों पर किए गए अध्ययन में यह पाया गया कि लिंग के आधार पर जीवन कौशल में कोई अंतर नहीं है, परंतु सरकारी विद्यालयों के छात्र निजी विद्यालयों के छात्रों से अधिक जीवन कौशल रखते हैं।

(4) हेजल बेरेट वाहलांग (2023) मेघालय के बाल देखभाल संस्थानों में किशोरों के जीवन कौशल का अध्ययन किया गया। परिणामों में पाया गया कि अधिकांश किशोरों का जीवन कौशल स्तर निम्न श्रेणी में आता है, किंतु उन्हें जीवन कौशल के अभ्यास का अवसर प्रदान किया जा रहा है।

(5) श्रीवास्तव एवं शर्मा (2023) इंदौर एवं उज्जैन के 450 स्नातक विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि अंतर्वैयक्तिक संबंधों के आधार पर जीवन कौशल शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्तियाँ सकारात्मक हैं, तथा पुरुष विद्यार्थियों में यह अभिवृत्ति अधिक प्रबल पाई गई।

समस्या कथन

बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन।

चरों का परिभाषीकरण

स्नातक स्तर : स्नातक स्तर से आशय उस प्रारम्भिक उच्च शिक्षा चरण से है, जिसमें विद्यार्थी माध्यमिक/उच्च माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने के बाद विश्वविद्यालय या महाविद्यालय में प्रवेश लेकर किसी विशिष्ट विषय या विषय समूह का व्यवस्थित

और उच्च स्तरीय अध्ययन करते हैं। यह उच्च शिक्षा का प्रथम चरण माना जाता है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को विषय विशेष का आधारभूत, व्यापक एवं गहन ज्ञान प्रदान करना, उनकी विश्लेषणात्मक सोच, समस्या समाधान क्षमता, मूल्यबोध, अनुसंधानशीलता एवं व्यावसायिक दक्षता का विकास करना होता है।

विद्यार्थी : विद्यार्थी वह व्यक्ति है जो औपचारिक, अनौपचारिक या गैर–औपचारिक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से किसी विषय या पाठ्यक्रम का अध्ययन करते हुए बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक और व्यावहारिक क्षमताओं का विकास करता है। वह ज्ञान की खोज, समझ, अभ्यास और अनुभव के आधार पर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

जीवन कौशल : जीवन कौशल वे psychosocial क्षमताएँ हैं जो व्यक्ति को दैनिक जीवन की चुनौतियों, परिस्थितियों और समस्याओं का प्रभावी ढंग से सामना करने में सक्षम बनाती हैं। ये कौशल व्यक्ति को सोचने, समझने, निर्णय लेने, समस्याओं का समाधान करने, भावनाओं को नियंत्रित करने, दूसरों के साथ सकारात्मक रूप से संवाद करने और स्वस्थ सामाजिक संबंध विकसित करने में सहायता करते हैं। जीवन कौशल न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं बल्कि सामाजिक, शैक्षणिक और व्यावसायिक सफलता के लिए भी आवश्यक माने जाते हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन।
2. बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के जीवन कौशल में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के जीवन कौशल में सार्थक अन्तर नहीं है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

जीवन कौशल मापने हेतु डॉ. अंजूम अहमद एवं श्रीमती सब्बा परवीन द्वारा निर्मित "जीवन कौशल मापनी" का उपयोग किया गया। यह मापनी विद्यार्थियों के विभिन्न जीवन कौशल आयामों जैसे निर्णय–निर्माण, समस्या समाधान, संचार कौशल, आत्म–जागरूकता, सहानुभूति, तनाव प्रबंधन, सृजनात्मकता, नेतृत्व क्षमता और आलोचनात्मक चिंतन को मापने में सहायक है। प्रतिभागियों द्वारा उनके उत्तर पांच–बिंदु मापन पर अंकित किए गए।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श की प्राप्ति हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक प्रविधि से शोध हेतु *बरेली जनपद के* स्नातक स्तर के महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाले 250 विद्यार्थियों को शामिल कर उनको लिंग एवं क्षेत्र के आधार में वर्गीकृत किया गया है।

परिकल्पनाओं का परिभाषीकरण

परिकल्पना क्रमांक 01 :– बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के जीवन कौशल में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या – 1

बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के जीवन कौशल की स्थिति

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	स्वतत्रांश (df) एवं सार्थकता स्तर	क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	निष्कर्ष (परिकल्पना)
छात्र	125	118.40	15.26	df = 498 (.05)*	1.82	मान सार्थक नहीं (स्वीकृत)
छात्राऐं	125	121.65	14.83			

*0.05 सार्थकता स्तर पर **C.R.**का सारणी मान = 1.96

दण्डारेख संख्या –4.01

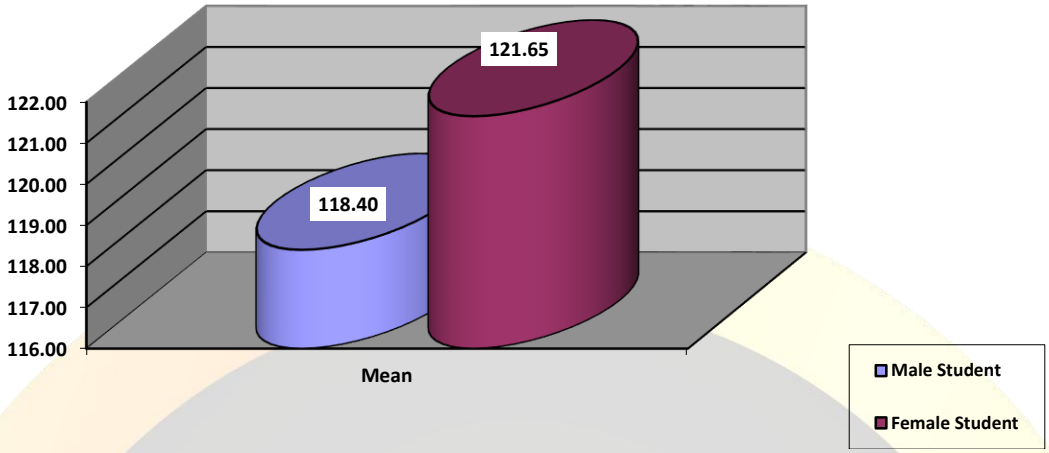

प्रदत्तों का विश्लेषण :– उपरोक्त तालिका संख्या 1 में बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत 250 छात्र एवं 250 छात्राओं के जीवन कौशल के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 118.40 एवं 121.65 है, मानक विचलन (σ) क्रमशः 15. 26 एवं 14.83 है तथा स्वतत्रांश संख्या 498 के .05 के सार्थकता स्तर पर क्रान्तिक अनुपात का मान 1.82 पाया गया जो कि स्वतत्रांश संख्या 498 के .05 के सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.96 से कम है अर्थात मान सार्थक नहीं है।

परिणाम की व्याख्या :– मान के सार्थक नहीं होने की स्थिति में शून्य परिकल्पना–H_{01} स्वीकृत की जाती है; जो कि यह इंगित करता है कि बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के जीवन कौशल में सार्थक अंतर विद्यमान नहीं है।

परिकल्पना क्रमांक 02 :– बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के जीवन कौशल में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या – 2

बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के जीवन कौशल की स्थिति

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	स्वतत्रांश (df) एवं सार्थकता स्तर	क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	निष्कर्ष (परिकल्पना)
ग्रामीण विद्यार्थी	125	115.72	16.20	df = 498 (.05)*	2.15	मान सार्थक (अस्वीकृत)
शहरी विद्यार्थी	125	120.33	15.74			

*0.05 सार्थकता स्तर पर **C.R.**का सारणी मान = 1.96

दण्डारेख संख्या –02

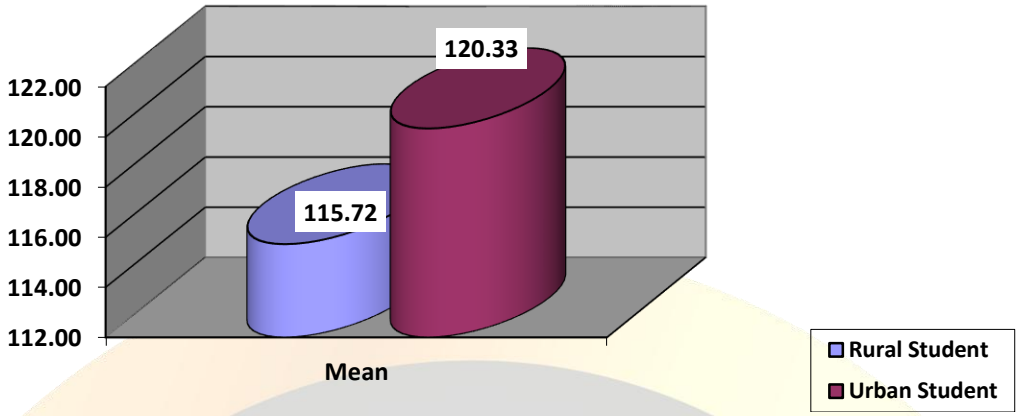

प्रदत्तों का विश्लेषण :– उपरोक्त तालिका संख्या 2 में बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत 250 ग्रामीण एवं 250 शहरी विद्यार्थियों के जीवन कौशल के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 115.72 एवं 120.33 है, मानक विचलन (σ) क्रमशः 16.20 एवं 15.74 है तथा स्वतत्रांश संख्या 498 के .05 के सार्थकता स्तर पर क्रान्तिक अनुपात का मान 2.15 पाया गया जो कि स्वतत्रांश संख्या 498 के .05 के सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.96 से अधिक है अर्थात मान सार्थक है।

परिणाम की व्याख्या :– मान के सार्थक होने की स्थिति में शून्य परिकल्पना–H_{02} निरस्त की जाती है; जो कि यह इंगित करता है कि बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के जीवन कौशल में सार्थक अंतर विद्यमान है।

मुख्य निष्कर्ष

1. बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के जीवन कौशल में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के जीवन कौशल में सार्थक अन्तर पाया गया।

परिणाम

बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों का जीवन कौशल उनके मानसिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास, संचार, निर्णय क्षमता और सामाजिक सहभागिता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि लिंग के आधार पर जीवन कौशल में कोई अंतर नहीं है किंतु क्षेत्रीय भिन्नताओं का प्रभाव जीवन कौशल पर पड़ता है। शहरी विद्यार्थी तकनीकी संसाधनों, सामाजिक अनुभवों और विविध अवसरों के कारण जीवन कौशल में अधिक सक्षम पाए गए। वहीं ग्रामीण विद्यार्थियों को जीवन कौशल के क्षेत्र में सशक्त बनाने हेतु विशेष प्रशिक्षण और जीवन कौशल–आधारित शिक्षा कार्यक्रमों की आवश्यकता है। यह शोध उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए एक मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकता है। जीवन कौशल शिक्षा को पाठ्यक्रम, सह–पाठ्यचर्या गतिविधियों और शिक्षक प्रशिक्षण में सम्मिलित करने से विद्यार्थियों का समग्र व्यक्तित्व विकास संभव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- शर्मा, मिनाक्षी (2025). भावनात्मक बुद्धिमत्ता, व्यक्तिगत विकास पहल और विश्वविद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन के संबंध में जीवन कौशल का अध्ययन, शोध प्रबन्ध, शिक्षा एवं सूचना विज्ञान संकाय, गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी साबो (पंजाब), भारत।

- शुक्ला एवं त्रिपाठी (2024). *रीवा जिले के शा0 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में संचालित जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम को आयोजित कराने वाले शिक्षकों एवं कर्मचारियों की शैक्षणिक भूमिका एवं अभिरूचि का अध्ययन, शोध पत्र,* JETIR.
- ठाकुर, मोनिका एवं नीलम (2024). किशोरों के समायोजन और जीवन कौशल का अध्ययन उनके लिंग, स्कूल के प्रकार और आवासीय पृष्ठभूमि के संबंध में अध्ययन, शोध प्रबन्ध, शिक्षा विद्यालय, अभिलाषी विश्वविद्यालय, चायल चौक, मंडी (हिमाचल प्रदेश)।
- हेजल बेरेट वाहलांग (2023). किशोरों के जीवन कौशल और मेघालय के बाल देखभाल संस्थानों के प्रति उनका दृष्टिकोण लिंग, मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में : एक अध्ययन, शोध प्रबन्ध, असम डॉन बॉस्को विश्वविद्यालय, टेपेसिया गार्डन, कमरकुची, सोनपुर, असम–भारत
- श्रीवास्तव एवं शर्मा (2023). अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध के आधार पर जीवन कौशल शिक्षा के प्रति स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का अध्ययन, शोध पत्र, JETIR

Cite this Article:

सिंह डॉ अमित कुमार और कुमारी यसबंत, "बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp-93–100,Volume-05, Issue-01, April-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ अमित कुमार सिंह एवं यसबंत कुमारी

For publication of Research Paper title

बरेली जनपद के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-01, Month April, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.11